"प्रिय गोपियों, जो मुझसे प्यार करते हैं उन लोगों से मैं वैसा व्यवहार नहीं करता जैसा मुझे करना चाहिए।"

ये अत्यंत आवश्यक है कि इस बात को हम समझे। भगवान और महापुरूष के वाक्य, क्रिया, मुद्रा को सरस्वती, बृहस्पती भी नही जानत सकते तो इस मृत्युलोक के लोगों की क्या गिनती? वे प्यार किसीसे करते है लेकिन दिखाई कुछ और पडता है। उनके व्यवहार से उनके प्यार का अंदाजा नही लगाना चाहिए।

प्राय: जब जीव भक्ति करने लगता है तो सोचता है कि भगवान हमसे कितना प्यार करते है! भगवान का कानून है कि जो जीव उनसे जिस भाव से जितना प्रेम करेगा उस भाव के अनुसार उतना प्रेम उनको उस जीव से करना पडेगा। उसीसे समझ लेना चाहिए कि जितना प्यार हम उनसे करते है उतना प्यार वो कर रहे है। बिल्कुल नपा तुला। वहा ये नही देखना है कि संसारी लाभ या हानी हो रही है। वो तो अपने कर्मों के अनुसार होती रहेगी। उस हिसाब से तो हानी होने पर आप नास्तिक हो जायेंगे। जिस कर्म बंधन के कारण हमे दु:ख मिल रहा है उनको मिटाने के लिए ही तो जीव साधना कर रहा है। अंत:करण शुद्ध होने पर ही सब दु:ख मिटेंगे एवं दिव्यानंद मिलेगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

फिर भागवत ये भी कहती है कि भगवान जिस पर कृपा करते है उसका संसार छीन लेते हैं। संसार माने धन, प्रतिष्ठा, नातेदार आदि। क्योंकि इसी में तो मनुष्य उलझे हुए है जिसके कारण वे भगवान की ओर नही चल रहे है। जिनको आप अपने मानते हो वही तो आपकी आध्यात्मिक उन्नती में रोडा बने है क्योंकि जिस मन से भक्ति करनी है वे आपका मन आपके अपने लोगों में ही फँसा हुआ है।

जिन गोपियों को श्रीकृष्ण सबसे अधिक प्यार करते थे (क्योंकि गोपियाँ श्रीकृष्ण से सब महापुरूषों में सबसे अधिक प्यार करती

थी।) उनको तो सौ साल का विरह दिया और जो रानियाँ श्रीकृष्ण से 'कुछ तेरा कुछ मेरा' यानी कुछ अपना सुख भी चाहती थी उनको सहवास देकर बडे प्यार का व्यवहार किया। उसका भी कारण था कि गोपी विरह का दुःसह दुःख यदि रानियों को देते तो उनका प्यार नही टिक पाता जबकि उसी विरह के कारण गोपियों का प्यार प्रतिक्षण बढ़ता गया।

श्रीकृष्ण ने कहा, "मैं ऐसा इसलिए करता हूं ताकि उनका मन हमेशा मेरे में व्यस्त रहे क्योंकि मैं ही तो सुख हूँ। जब एक अमीर व्यक्ति अचानक अपनी संपत्ति खो देता है, तो वह लगातार अपनी खोई हुई धन के बारे में सोचता है और इसे बुरी तरह से वापस चाहता है। वैसे ही इस अनादि काल दुःखी जीव, उसको मैं अनंत सुख का धन मिल गया। जब इसे मेरे प्रस्थान पर वो खो देता है तो वह लगातार मेरे ही बारे में सोचता है और उस सुख को वापस चाहता है तो मेरे प्रति प्रेम बढ़ता है। प्रेम बढ़ने से मेरे वापस मिलने पर सुख में भी वृद्धी होती है। इसलिए आपका प्रेम बढ़ाने के लिए आप सब से अप्रत्यक्ष रूप से प्यार करते हुए भी मैंने खुद को छुपाया। मैं कही गया नही था बस आलक्षित होकर आप सब को देख रहा था।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

इसलिए आपको मेरे प्यार में गलती नहीं निकालनी चाहिए। तुम मेरे लिए सभी प्रिय हो और मैं तुम्हारे लिए प्रिय हूँ। प्रिय गोपियों! आपने परिवार और घर के बेड़ियों को काट दिया है जो महान योगी और तपस्वी के लिए भी संभव नहीं है। मेरे साथ आपका मिलन दिव्य, आत्मिक , शुद्ध और दोष रहित है। अगर मैं, अमर शरीर के माध्यम से, अनंत समय के लिए आपकी सेवा करता हूं, तो मैं भी आपके प्यार, सेवा और बलिदान ऋण चुका नहीं पाऊंगा। आप मुझे अपने कोमल स्वभाव से ऋण से मुक्त सकती हैं, लेकिन मैं हमेशा के लिए आपके लिए ऋणी रहूंगा। "

श्रीकृष्ण का उत्तर सुनकर गोपियों का श्रीकृष्ण के प्यार का